

## पद २६५

(राग: यमन जिल्हा - ताल: त्रिताल)

तोरे बन्सी के नाद दिवानी भई ॥१॥ गौके बछरे भैंशी कु छोरी ।  
बैल से दूध निकाल रही ॥२॥ नाक में सुरमा कानों में मिस्सी ।

नयनों में कुंकू लगाते रही ॥३॥ हाथों में पैजण पाँवों में चोली ।  
शिरकु सारी लपेट रही ॥४॥ मानिक के प्रभु नाथ कृष्णजी । तोरे  
मुरलीने बहुत जुलम की ॥५॥